शब्दांमृत®

(हिंदी)

भाग-२

विलास जैन

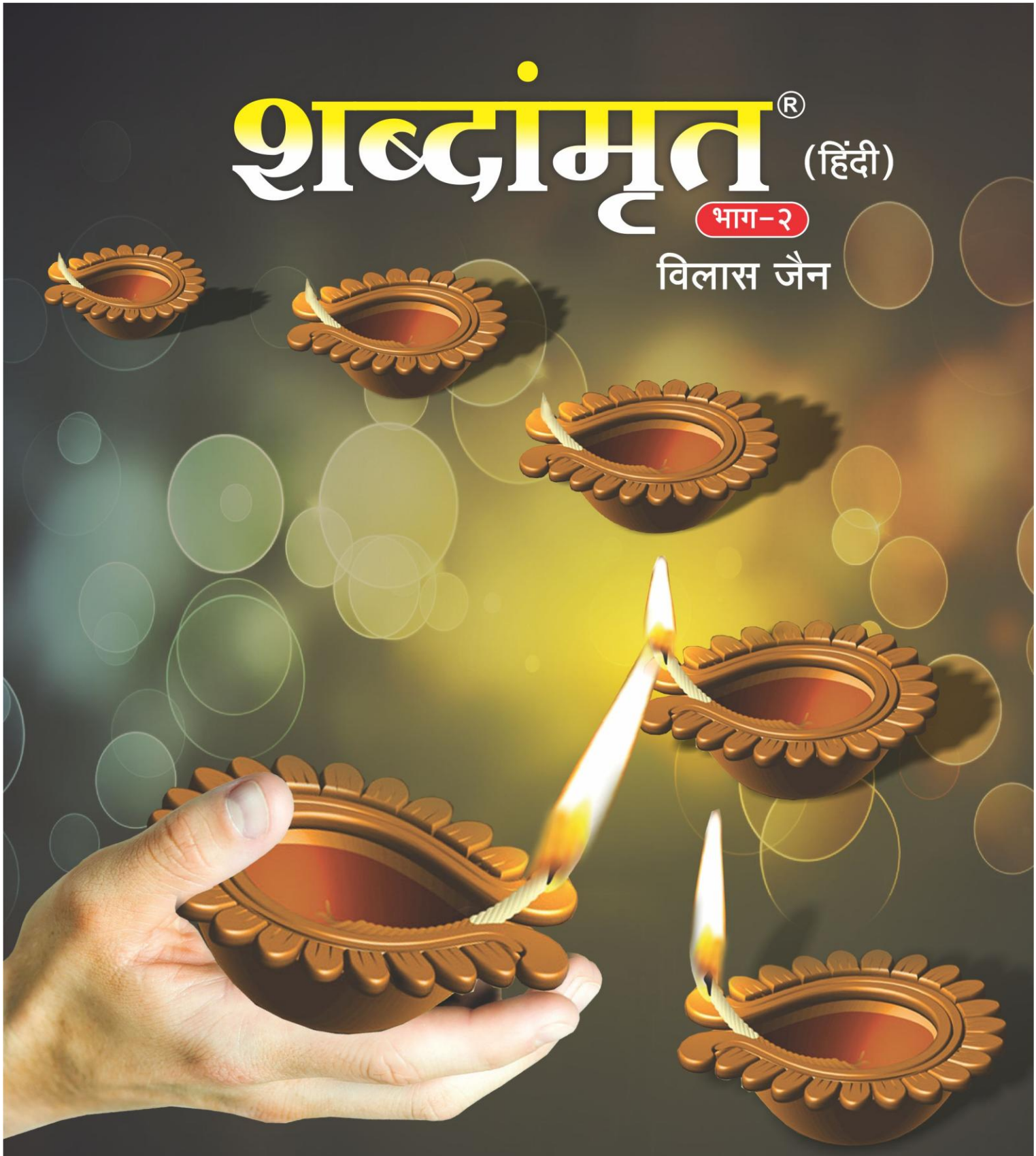

यह कार्य नही क्रांती है।

NEW ERA'S SELF HELP®

समर्पण

यह किताब समर्पित है

वसुंधरा के उन रक्षको को,

जो

इसे अपनी विरासत नही

बल्कि

अपने बच्चो की,

धरोहर मानकर

जतन करते है।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांती है।

अल्प परिचय....

विलास जैन

विलास जैन इनका जन्म एक छोटेसे गाँव मे हुआ। गाँव मे पढ़ाई की सुविधा न होने के कारण उन्हे छोटी उम्र मे ही गाँव छोड़कर शहरमे पढ़ाई के लिये जाना पड़ा। उन्हे किसी का भी मार्गदर्शन न होते हुए भी उन्होने सन १९८८ मे पुणे शहरके एक नामांकित संस्थासे एम.बी.ए. (मार्केटींग) का अध्ययन पुरा किया। उसके बाद उन्होने अपना चिपकाने वाले पदार्थोका व्यवसाय शुरु किया। शुरु मे इन चिजोंके मार्केटींग का व्यवसाय किया फिर बादमे वही चिजोका खुद उत्पादन शुरु किया। उनका व्यक्तिमत्व बहुमुखी होने के कारण आज वह एक सफल दूरदर्षी उद्योजक है। उन्होने चिपकाने वाले पदार्थो मे छे नये संशोधन किये है। और अनेक उत्पादन खुद बनाये है। वह एक सफल उद्योजक, संशोधक, किसान, समाजकारणी, राजकारणी तो है ही, साथ मे एक उत्कृष्ट साहित्यीक भी है। उनका साहीत्य हिंदी एवं मराठी भाषामे है। संपुर्ण साहित्य समाजपयोगी, संस्कारीत करनेवाले, प्रेरणा देनेवाले, अध्यात्म का महत्व बतलानेवाले और नैतिक मूल्य बढ़ाने वाले है। उन्होने हिंदी एवं मराठी भाषामे बालकविताये, प्रेरणा कविताये, देशभक्तीपर कविता, दोहे, प्रेरक शायरी, सुविचार, भजन, जीवन दर्शन कवितायें, ग्रहोपर कविताये, समाज रचनापर कविताये, छोटी शिक्षाप्रद कहानियाँ, मराठी गझल ऐसे अनेक विषयोंका एक बड़ा संग्रह तैयार किया हुआ है। उनकी अबतक पंधरह किताबे प्रकाशित हो चुकी है। उनका सामाजिक, राजकीय और अध्यात्मिक विषयोंका भरपूर अनुभव तथा गाँव और शहर के वातावरण मे बिताये हुये कई साल उनको अपने साहीत्य यात्रा मे बहोत ही उपयोगी साबित हुये है। प्रकृती से अधिक प्रेम होने के कारण उन्होंने आज तक हजारो वृक्ष लगाये है। और इस किताब से मिलनेवाली संपूर्ण राशी पर्यावरण कि सुरक्षितता में ही खर्च होगी इसका उन्होंने प्रण किया है।

यह कार्य नही क्रांती है।

शब्दांमृत® (हिंदी)

भाग-२

प्रकाशन	:	प्रथम
प्रकाशक	:	विलास जैन
लेखन	:	विलास जैन
प्रतिया	:	
अक्षरांकन	:	विलास जैन
निर्मिती	:	विलास जैन
मुद्रक	:	

© New Era Self Help Marketing India Ltd.
All Rights reserved 2020
New Era Self Help Marketing India Ltd. is registered in India under Public Ltd.
Company Reg.No. : U 51909 MH 2002 PLC 138100

सर्वाधिकार सुरक्षित –
पूर्वानुमती के बिना इस पुस्तक में से किसी भी अंश को किसी भी कारण से या किसी भी रुप में पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकाशन के संदर्भ में अनधिकृत कृति का पता चलते ही संबंधित व्यक्ति या संस्था पर हानि के संदर्भ में कानूनी कारवाई की जायेगी।

यह कार्य नही क्रांती है।

प्रस्तावना ...

जिंदगी मे संघर्ष करते वक्त अनेक कविताये, कुछ शब्द समुह, सुविचार, शेरो शायरी या दोहे हमारी लढ़ने की शक्ति दुगनी कर देते है। हारती हुई बाजी जितने मे हमारी हौसला बढा कर अैसे साहित्य हमारे मददगार साबित होते है। अनेक मोड़ोपर यह हमे सही रास्ता दिखाते है। गुमराह होनेसे रोकते है, और हमे सही जीवन जीने की प्रेरणा देते है। मेरे भी जिंदगीमे ऐसे अनेक साहित्य मार्गदर्शक साबित हुये है। उसी से प्रेरणा लेकर मैने सोचा मै भी कुछ ऐसे शब्दसमुह तैय्यार करु जो समाजमे मल्हम, टॉनिक या मार्गदर्शक का काम करेगें। आजके इस सांस्कृतिक प्रदुषन के जमानेमे इन सब चीजो का महत्व पहलेसे ज्यादा बढ़ गया है। क्योकी अब हमें हमारे पथ से गुमराह करने के लिये टि.व्ही. हमारे घरमेही बैठा है। व्हॉटस् अप और फेसबुक द्वारा अब आसानीसे बिना किसीको मालुम किये अनेक असामाजिक बाते की जा सकती है। पहले हर किसीकी जिंदगी संस्कार, नितीमुल्य, आदर, शर्म और त्याग के धागोसे बंधी रहती थी। पर अब इलेक्ट्रॉनिक्स् मिड़िया के आगमन ने इन सभी धागोको तोड़ दिया है। अब हमे क्या खाना है, क्या पीना है, क्या पहनना है, कैसे दिखना है, कैसे बर्ताव करना, क्या खरीदना है, यह इलेक्ट्रॉनिक्स् मिड़ीया सिखाता है। इतना ही नही हमारे रिश्ते कैसे हो वो भी कई धारावाहीको द्वारा हमारे अवचेतन मन मे बिठाने का काम हो रहा है। मुझे आशा है के इस किताबमे से कुछ कविताये, आपको गुमराह होनेसे रोक सकती है। अगर आप टूट चुके हो, हार चुके हो तो इसमेसे कुछ कविताये आपके लिये संजीवनिका काम कर सकती है। अगर आपको इस किताबसे कुछ लाभ हुआ तो मेरा लिखना सार्थक होगा।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांती है।

शब्दांमृत® (हिंदी)

भाग-२

सूची

अ.नं.	विषय	पृष्ठ क्र.
१)	तुफान बार बार आयेंगे	..... ०१
२)	मुझे सोने नही देता	..... ०२
३)	हॅलो ओ माय फॅन्टसी	..... ०३
४)	मेरे जनाजे पे आना	..... ०४
५)	मै आऊंगा	..... ०५
६)	मित्रो बदलो	..... ०६
७)	हो गया है मुझे	..... ०७
८)	उम्र का असर	..... ०८
९)	आखरी सफर	..... ०९
१०)	अलोन	..... १०
११)	चंचल मन	..... ११
१२)	मेरे मौला	..... १२
१३)	मिलना बिछडना	..... १३
१४)	इन्सान बनुंगा	..... १४
१५)	मै अडीग राही	..... १५
१६)	जिवन मध्य	..... १६
१७)	चलो जुदा हो जाये	..... १७
१८)	एक साल चला गया	..... १८
१९)	उडना है मुझे	..... १९
२०)	भावभीनी वापसी	..... २०
२१)	विरह	..... २१
२२)	कोई रास्ता नया	..... २२
२३)	तुही तेरा सहारा	..... २३
२४)	नाराज हुँ मै	..... २४
२५)	मै तेरा परीवार	..... २५

यह कार्य नही क्रांती है।

तुफान बार बार आयेंगे

तुफान बार बार आयेंगे
हौसले और अरमान ना उडा पायेंगे
ऋत बदलेगी बहार आयेगी
मधुबन फिरसे खिल जायेंगे

कयामत की अगली सुबह
पंछी फिरसे आशाओके गित गायगें
पतझड से डरकर यारो
पत्ते खिलनेसे बाज ना आयेंगे

शिकारीयोसे डरकर वनचर
वन का आनंद ना छोड पायेंगे
खतरो से क्या डरना यारो
खुद भि बचेंगे औरोको भि बचायेंगे

हारकर सबकुछ तुफानोमे
जो फिरसे लढ पायेंगे
वो दिल जितकर सभी का
शोहरत और दौलत कमायेंगे

वसुलो के लिये लढनेवाले
कभी ना हार पायेंगे
संकटामे आत्मबल दिखानेवाले
जिवन योध्दा कहलायेंगे

विलास जैन

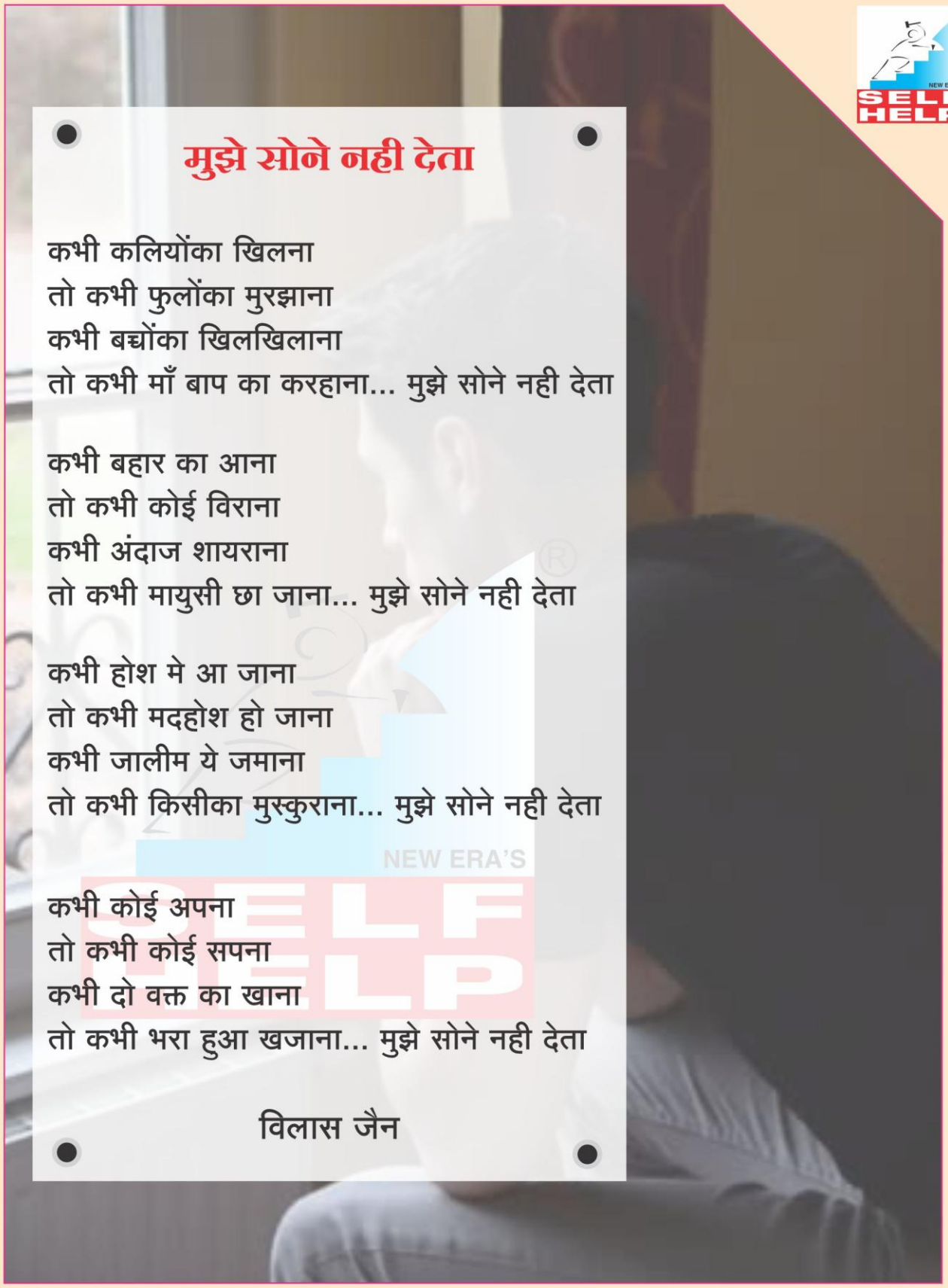

मुझे सोने नही देता

कभी कलियोंका खिलना
तो कभी फुलोंका मुरझाना
कभी बच्चोंका खिलखिलाना
तो कभी माँ बाप का करहाना... मुझे सोने नही देता

कभी बहार का आना
तो कभी कोई विराना
कभी अंदाज शायराना
तो कभी मायुसी छा जाना... मुझे सोने नही देता

कभी होश मे आ जाना
तो कभी मदहोश हो जाना
कभी जालीम ये जमाना
तो कभी किसीका मुस्कुराना... मुझे सोने नही देता

कभी कोई अपना
तो कभी कोई सपना
कभी दो वक्त का खाना
तो कभी भरा हुआ खजाना... मुझे सोने नही देता

विलास जैन

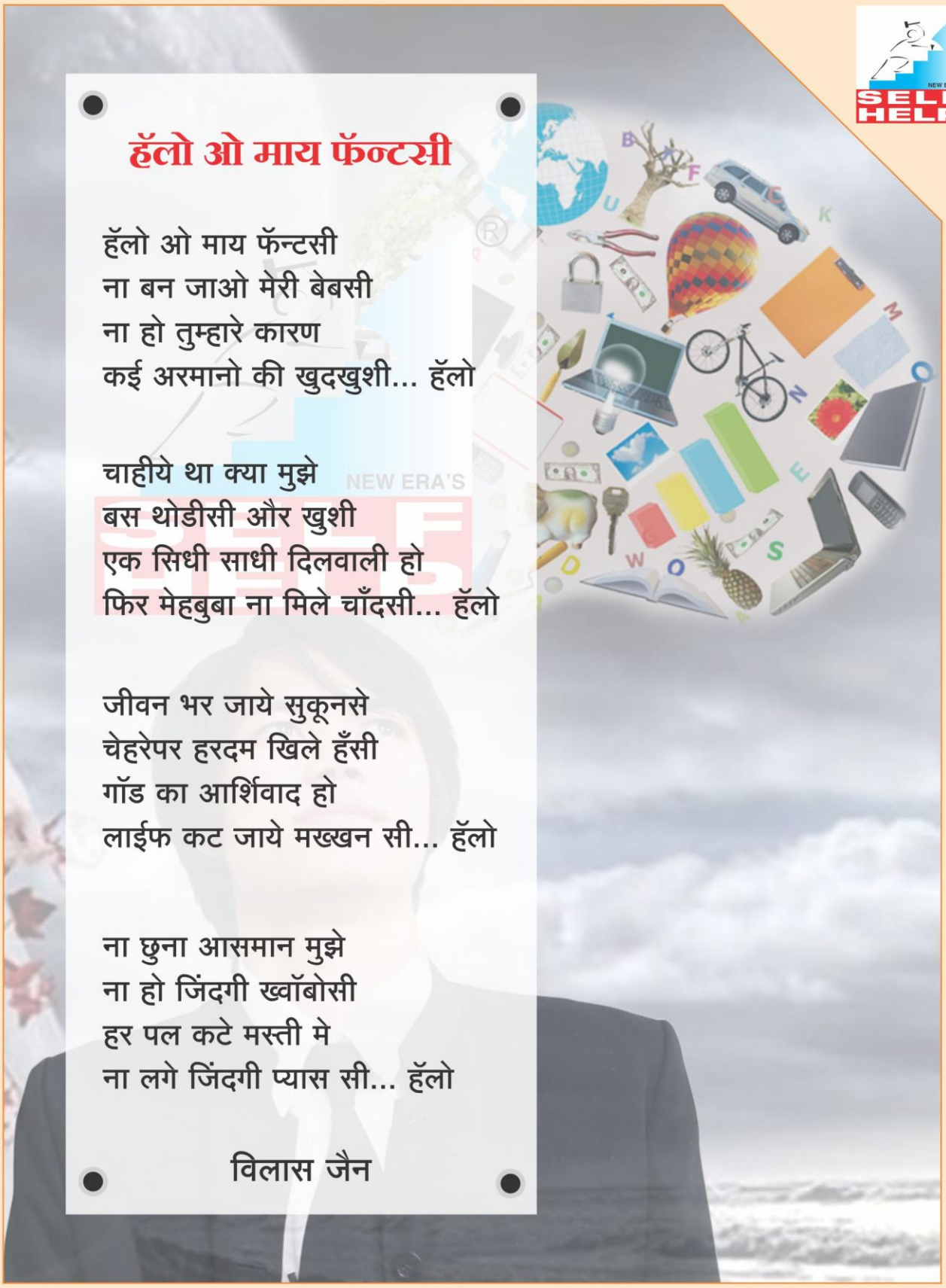

हॅलो ओ माय फॅन्टसी

हॅलो ओ माय फॅन्टसी
ना बन जाओ मेरी बेबसी
ना हो तुम्हारे कारण
कई अरमानो की खुदखुशी... हॅलो

चाहीये था क्या मुझे
बस थोडीसी और खुशी
एक सिधी साधी दिलवाली हो
फिर मेहबुबा ना मिले चाँदसी... हॅलो

जीवन भर जाये सुकूनसे
चेहरेपर हरदम खिले हँसी
गॉड का आर्शिवाद हो
लाईफ कट जाये मखखन सी... हॅलो

ना छुना आसमान मुझे
ना हो जिंदगी ख्वॉबोसी
हर पल कटे मस्ती मे
ना लगे जिंदगी प्यास सी... हॅलो

विलास जैन

मेरे जनाजे पे आना

मेरे जनाजे पे चले आना
यारो तुम सज धज के
जमाना भी देख ले हारा था
मै दिल हाथो किस किस के

जीते जी, खोल ना पाया दरवाजे
मै सबके लिये, अपने दिलके
शरीर समबधोंमें बंधा हुआ था
हर अंग बटे थे जिस्म के

अक्सर मातम मनाते है लोग
मौत से डर या हार के
कई रुपो में, पछाडा है मौतको
मैने उतरकर, आखाडेमे मौतके

जश्न मनाओ यारो आज
बाटो मिठाईयाँ नाच गाके
मौत ले गई मिट्टी,
अब कई अरमान पूरे होगें रुहके

विलास जैन

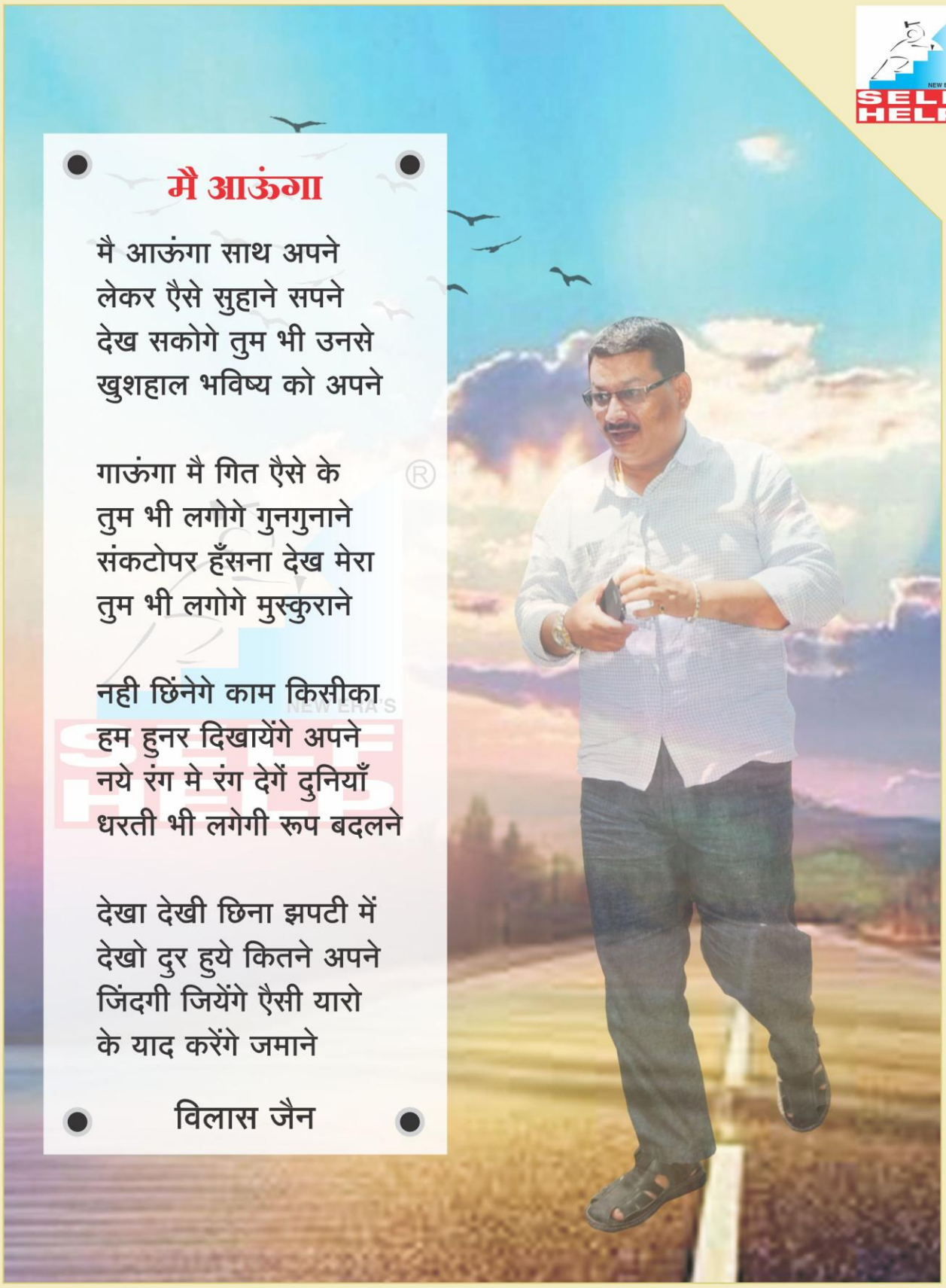

मै आऊंगा

मै आऊंगा साथ अपने
लेकर ऐसे सुहाने सपने
देख सकोगे तुम भी उनसे
खुशहाल भविष्य को अपने

गाऊंगा मै गित ऐसे के
तुम भी लगोगे गुनगुनाने
संकटोपर हँसना देख मेरा
तुम भी लगोगे मुस्कुराने

नही छिंनेगे काम किसीका
हम हुनर दिखायेंगे अपने
नये रंग मे रंग देगें दुनियाँ
धरती भी लगेगी रूप बदलने

देखा देखी छिना झपटी में
देखो दुर हुये कितने अपने
जिंदगी जियेंगे ऐसी यारो
के याद करेंगे जमाने

विलास जैन

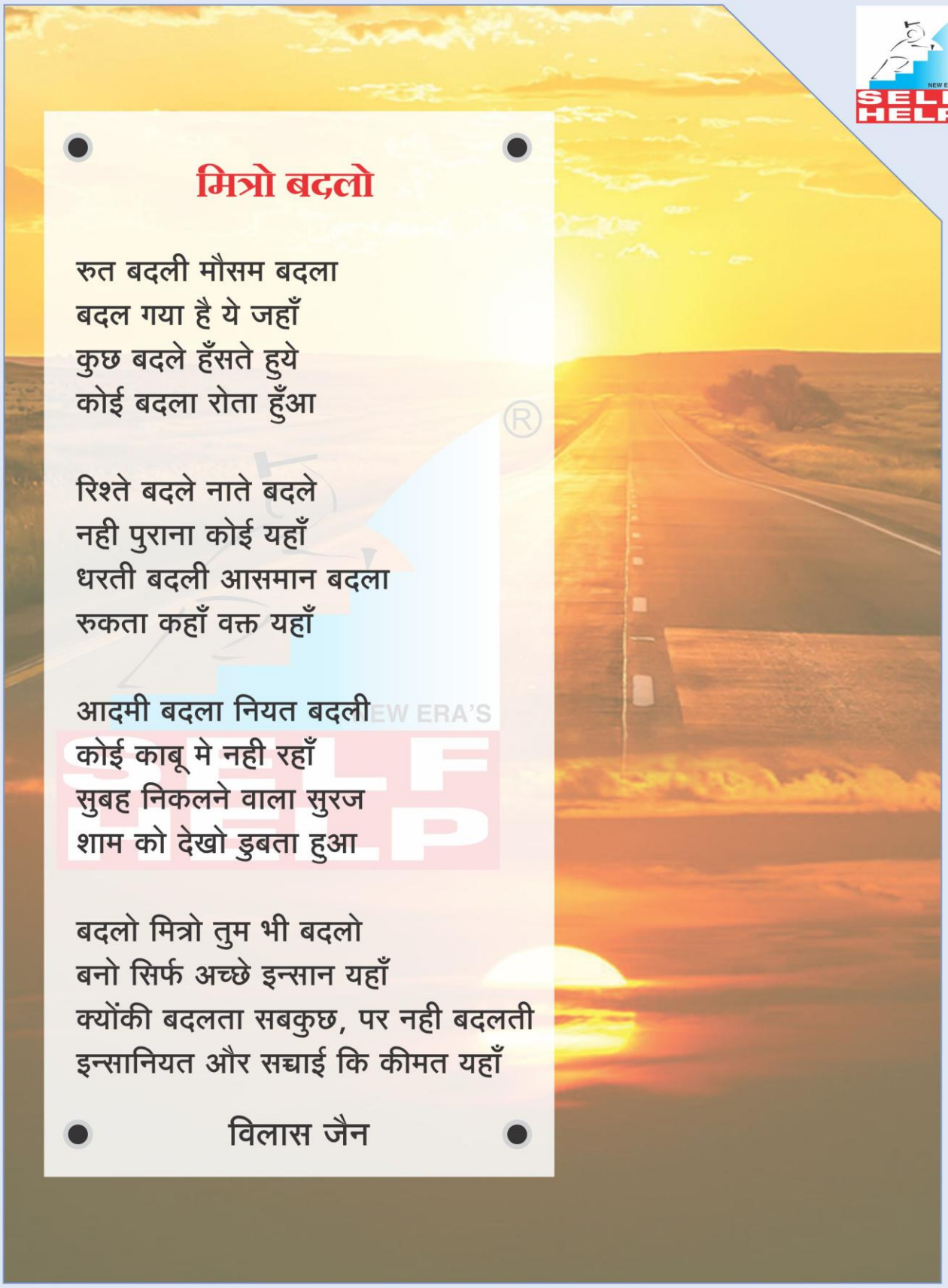

मित्रो बदलो

रुत बदली मौसम बदला
बदल गया है ये जहाँ
कुछ बदले हँसते हुये
कोई बदला रोता हुँआ

रिश्ते बदले नाते बदले
नही पुराना कोई यहाँ
धरती बदली आसमान बदला
रुकता कहाँ वक्त यहाँ

आदमी बदला नियत बदली
कोई काबू मे नही रहाँ
सुबह निकलने वाला सुरज
शाम को देखो डुबता हुआ

बदलो मित्रो तुम भी बदलो
बनो सिर्फ अच्छे इन्सान यहाँ
क्योंकी बदलता सबकुछ, पर नही बदलती
इन्सानियत और सच्चाई कि कीमत यहाँ

विलास जैन

हो गया है मुझे

हो गया है मुझे
व्हॉटस् अप वाला प्यार,
सब हवा कि है बाते
हवा के है यार।

ना कुछ खोना ना पाना
बहोत सेफ है ये व्यापार,
एक सेकंद में डिलीट करो
दुसरी सेकंद मे री इंस्टॉल।

फेस अच्छा नही तो क्या
मदत को 'एप्स्' है तैय्यार,
मै जितने चाहूँ उतने
बनालू अपने यार।

मजनू और रांझा भी शरमाये
ऐसै करता हुँ मै प्यार,
फिर लैला और हिर बनकर
करती नही वो भी इन्कार।

चार पैसोमे चार दोस्त
नही इससे सस्ता कोई बाजार,
मॅसेजेस् फ्रि मिलते है
घर से कुछ नही जाता यार।

भावनाओ कि जरुरत नही
एक रीचार्ज मे दोनो खुषगवार,
छोटे छोटे दिल हमारे
करते सबको थोडा थोडा प्यार।

विलास जैन

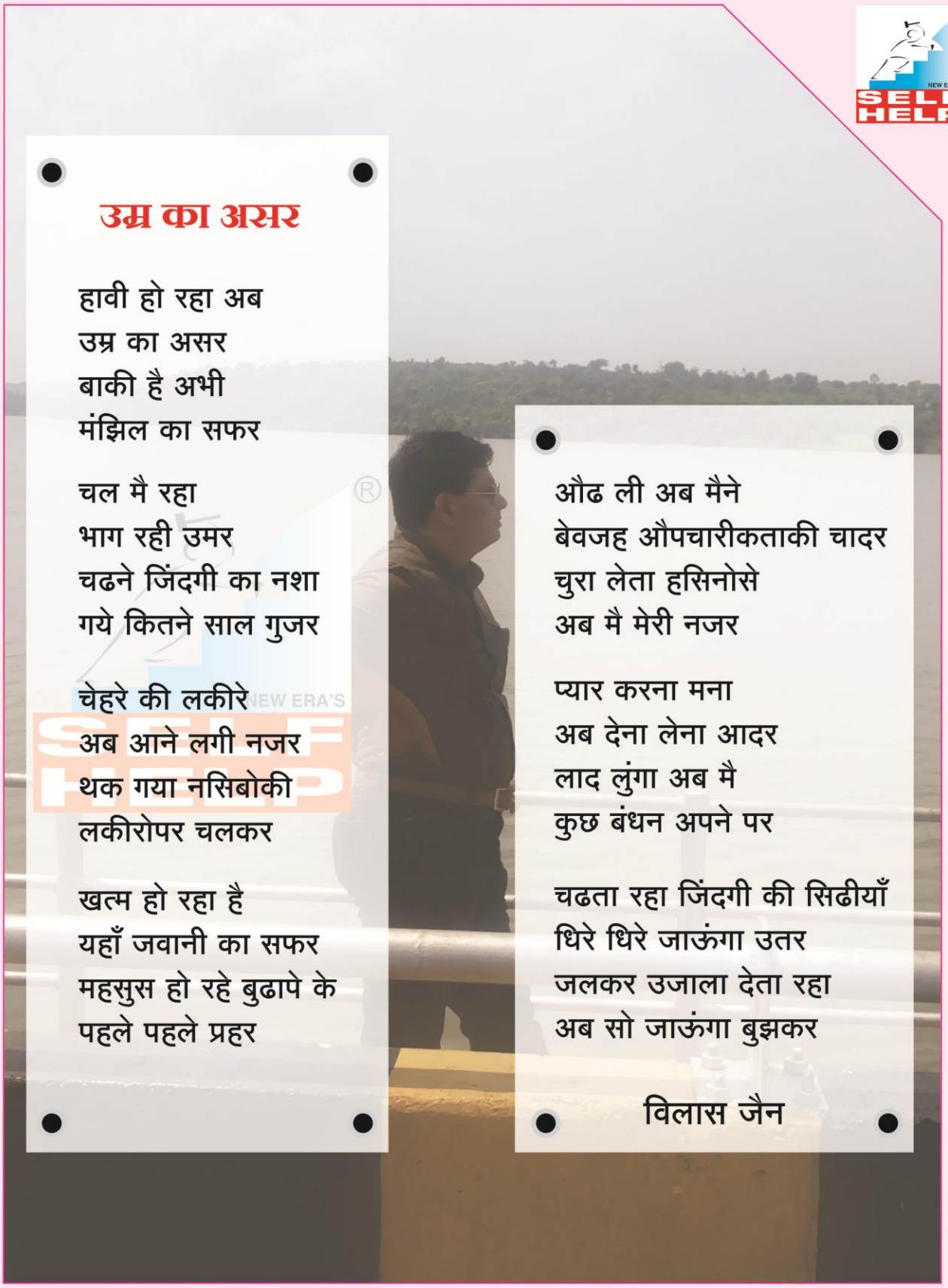

उम्र का असर

हावी हो रहा अब
उम्र का असर
बाकी है अभी
मंझिल का सफर

चल मै रहा
भाग रही उमर
चढने जिंदगी का नशा
गये कितने साल गुजर

चेहरे की लकीरे
अब आने लगी नजर
थक गया नसिबोकी
लकीरोपर चलकर

खत्म हो रहा है
यहाँ जवानी का सफर
महसुस हो रहे बुढापे के
पहले पहले प्रहर

औढ ली अब मैने
बेवजह औपचारीकताकी चादर
चुरा लेता हसिनोसे
अब मै मेरी नजर

प्यार करना मना
अब देना लेना आदर
लाद लुंगा अब मै
कुछ बंधन अपने पर

चढता रहा जिंदगी की सिढीयाँ
धिरे धिरे जाऊंगा उतर
जलकर उजाला देता रहा
अब सो जाऊंगा बुझकर

विलास जैन

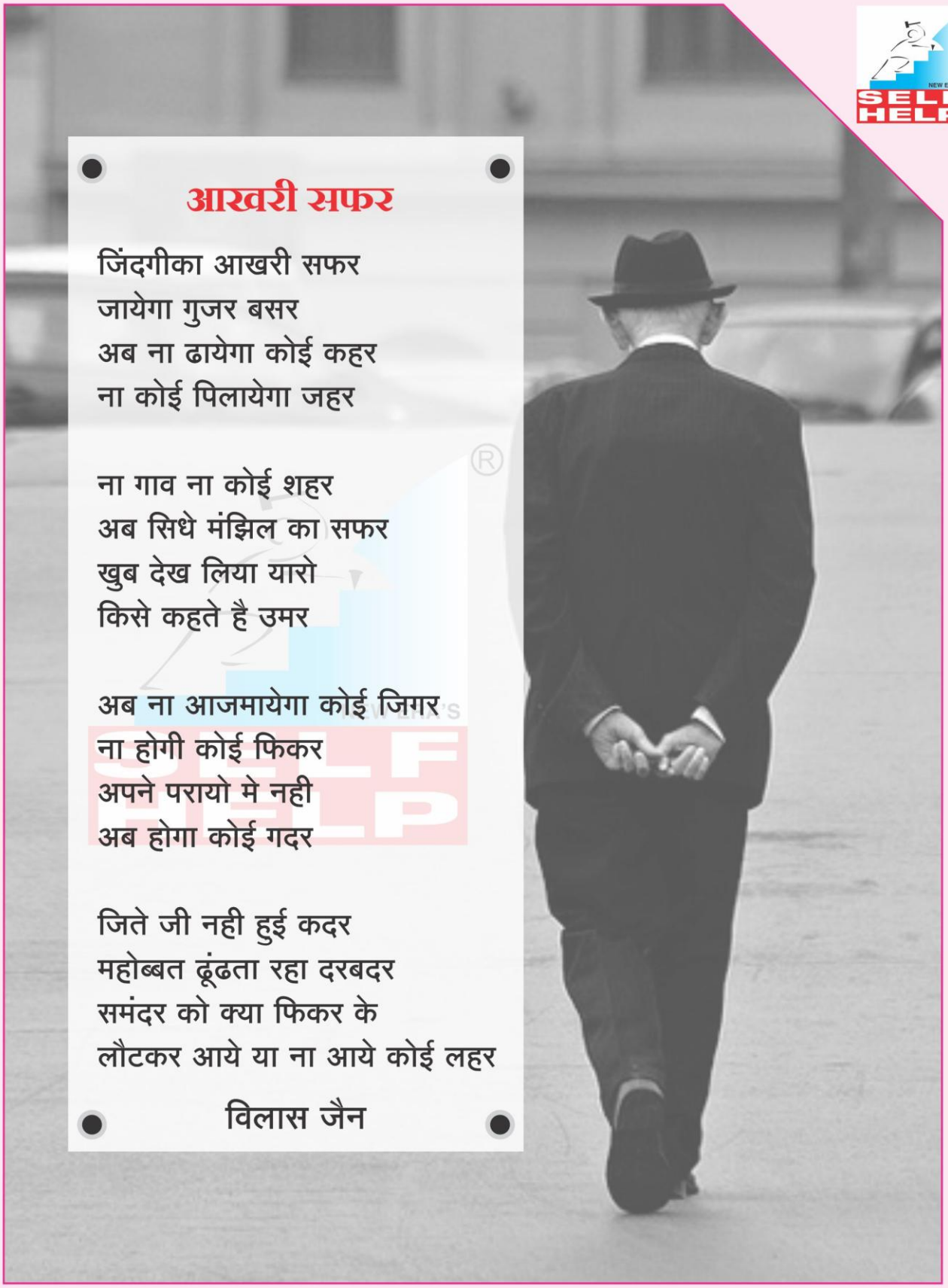

आखरी सफर

जिंदगीका आखरी सफर
जायेगा गुजर बसर
अब ना ढायेगा कोई कहर
ना कोई पिलायेगा जहर

ना गाव ना कोई शहर
अब सिधे मंझिल का सफर
खुब देख लिया यारो
किसे कहते है उमर

अब ना आजमायेगा कोई जिगर
ना होगी कोई फिकर
अपने परायो मे नही
अब होगा कोई गदर

जिते जी नही हुई कदर
महोब्बत ढूंढता रहा दरबदर
समंदर को क्या फिकर के
लौटकर आये या ना आये कोई लहर

विलास जैन

अलोन

लोनली नही रहो अलोन
तनहा नही हो स्व मिलन
पढो लिखो करो आत्म चिंतन
भीड करती गुमराह मन

कमजोरी नही अकेलापन
यह ताकद है छुनेकी गगन
सच्चाई और परछाई पर हो मनन
उलझे संबंधोसे अच्छा आत्म आराधन

सिखो कैसे चमकाए मन
सोचो बिते कैसे हर क्षण
क्यों आई सामने उलझन
हरदम करो इसका मंथन

अकेले पनका तुम करो जतन
मिलेगा तुम्हे विद्या धन रतन
भीड नही कर पाई आत्म रक्षण
बहका मन बहका हर क्षण

रहकर अलोन हुए सभी संशोधन
मिले राज कैसे चमकाए जीवन
राम रहीम इसमें रहे रमन
इसीने ही दिया चैन और अमन

विलास जैन

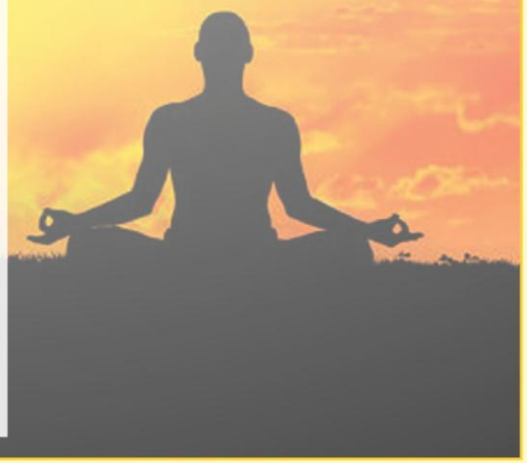

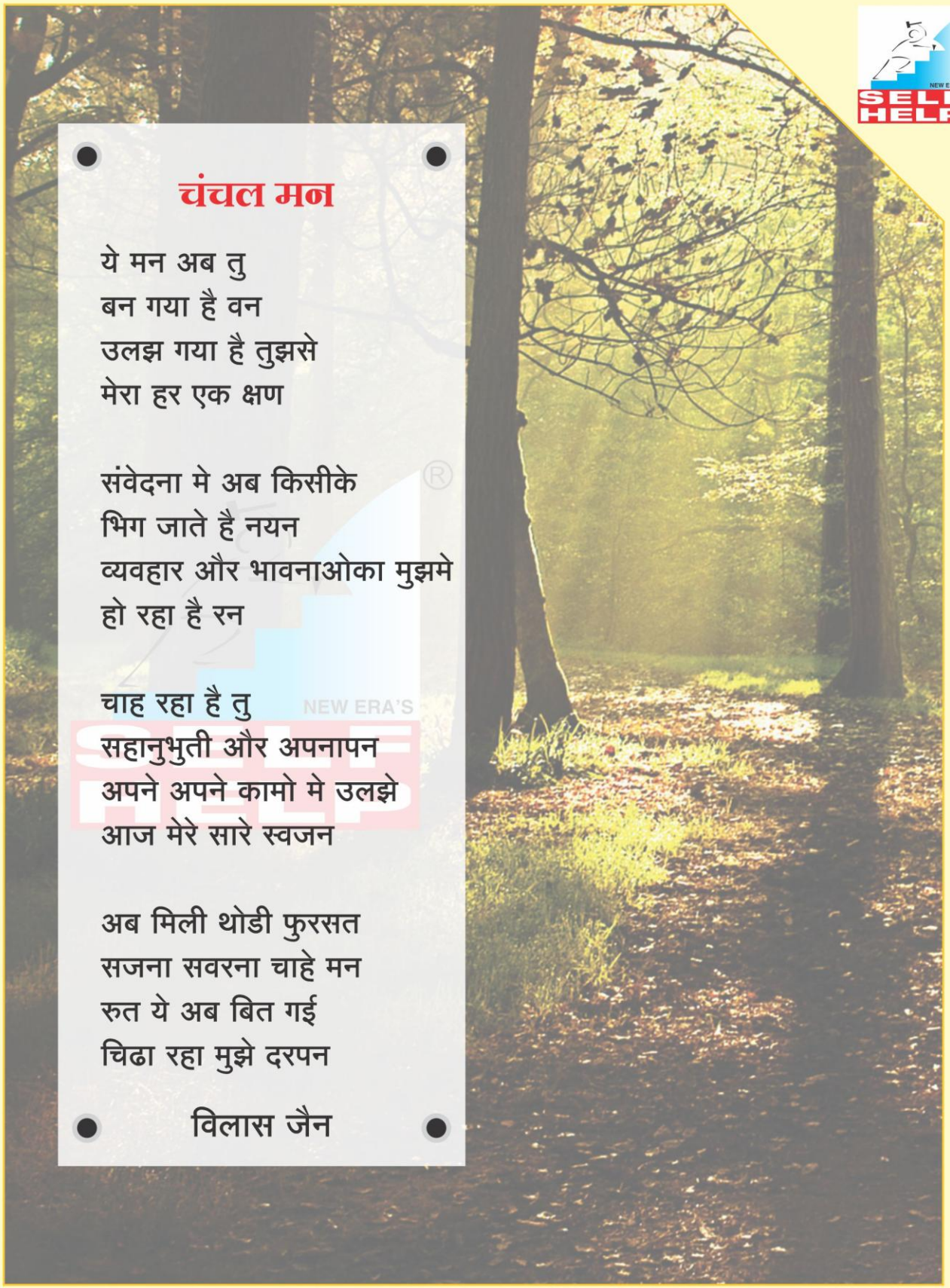

चंचल मन

ये मन अब तु
बन गया है वन
उलझ गया है तुझसे
मेरा हर एक क्षण

संवेदना मे अब किसीके
भिग जाते है नयन
व्यवहार और भावनाओका मुझमे
हो रहा है रन

चाह रहा है तु
सहानुभुती और अपनापन
अपने अपने कामो मे उलझे
आज मेरे सारे स्वजन

अब मिली थोडी फुरसत
सजना सवरना चाहे मन
रुत ये अब बित गई
चिढा रहा मुझे दरपन

विलास जैन

मेरे मौला

किसीके नादानी को
बेफिक्री ना समझ
किसीके हलाली को
बेखुदी ना समझ
देने वाला भि तु
और लेने वाला भि तु
कुछ ना देकर
सबकुछ ना छिन... मेरे मौला

कई ठोकरे तोडकर
बिखेर देती है मुझे
फिर भी बेवफा नही
कहता मै तुझे
ना फरीयाद ना आरजु
लेकर आया हुँ
मेरे वफा को मेरे
विश्वास मे बदल दे... मेरे मौला

कई आयेंगे तुझपर
इल्जाम उठाने वाले
कई आयेंगे तुझसे
सवाल पुछने वाले
दिलोजाँ तुजपर लुटाकर
तेरे दर पर आया हुँ
मेरे बंदगीको मेरी
सहने की ताकद ना समझ... मेरे मौला

ना ताज चाहीये
ना राज चाहीये
तुझतक पोहोच पाये
वो आवाज चाहीये
सेहतमंदी अकलमंदी में
तेरी रजामंदी चाहीये
तेरे नक्शो कदमपर
चल सकु ऐसे पाव देदे... मेरे मौला

विलास जैन

मिलना बिछडना

पतझड चला गया
वसंत है अब आया
दो विसंगतीयों को सृष्टीने
कितना खुब मिलाया

मिलना बिछडना तो है
सब ये सृष्टी की माया
हम इससे बहके हारे थके
क्यो हमे ये समझ ना आया

सुरज का अस्त हुआ
चाँद बादल पर निकल आया
जीवनने हमारे भी राग
धुप छाँव, रात दिन का गाया

मिलने बिछडने के निरंतर खलमे
सोचते रहे क्या पाया क्या गवाँया
हर हाल मे मस्त रहनेका
सृष्टी का राज कोई जान ना पाया

विलास जैन

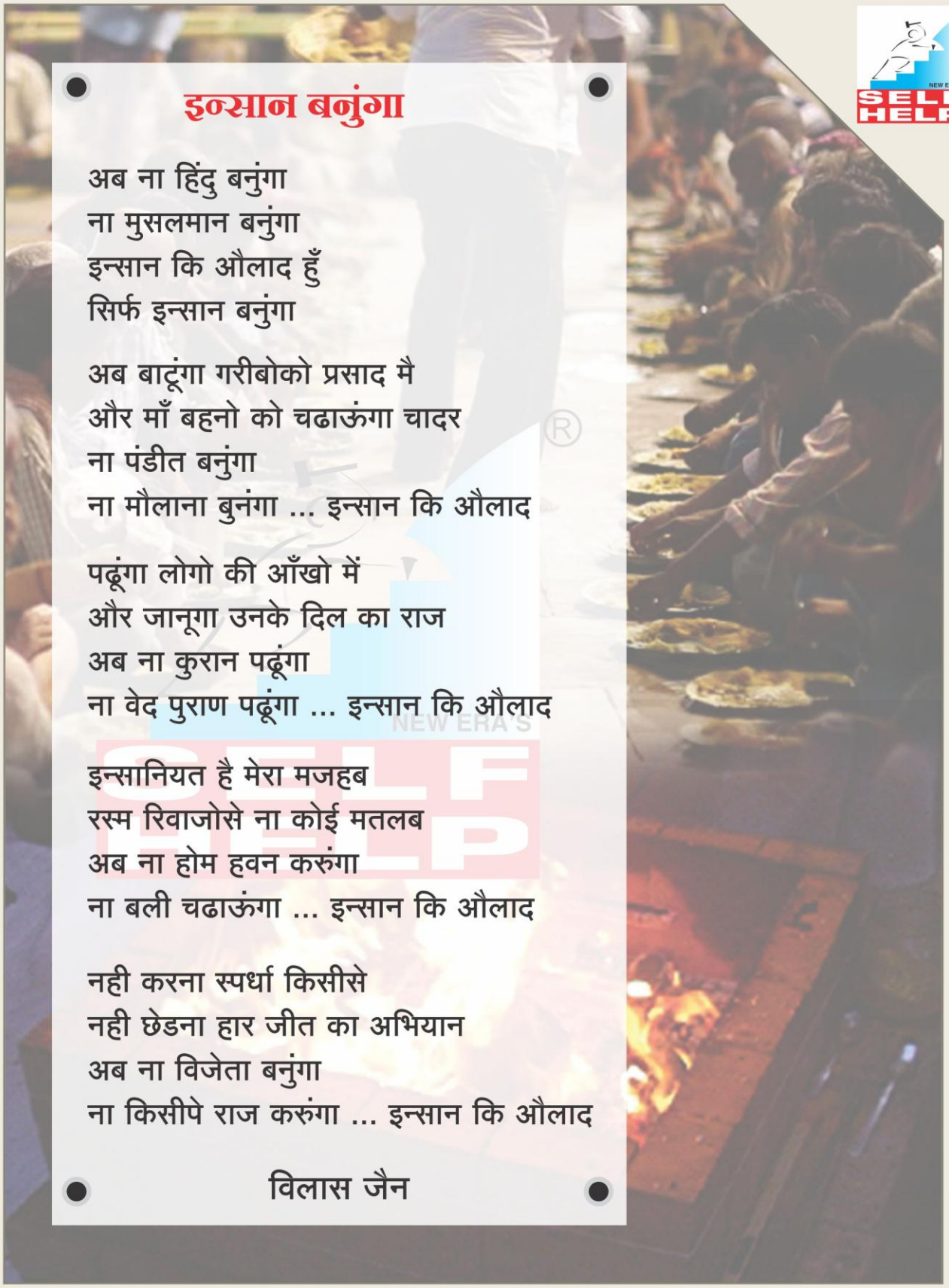

इन्सान बनुंगा

अब ना हिंदु बनुंगा
ना मुसलमान बनुंगा
इन्सान कि औलाद हुँ
सिर्फ इन्सान बनुंगा

अब बाटूंगा गरीबोको प्रसाद मै
और माँ बहनो को चढाऊंगा चादर
ना पंडीत बनुंगा
ना मौलाना बुनंगा ... इन्सान कि औलाद

पढूंगा लोगो की आँखो में
और जानूगा उनके दिल का राज
अब ना कुरान पढूंगा
ना वेद पुराण पढूंगा ... इन्सान कि औलाद

इन्सानियत है मेरा मजहब
रस्म रिवाजोसे ना कोई मतलब
अब ना होम हवन करुंगा
ना बली चढाऊंगा ... इन्सान कि औलाद

नही करना स्पर्धा किसीसे
नही छेडना हार जीत का अभियान
अब ना विजेता बनुंगा
ना किसीपे राज करुंगा ... इन्सान कि औलाद

विलास जैन

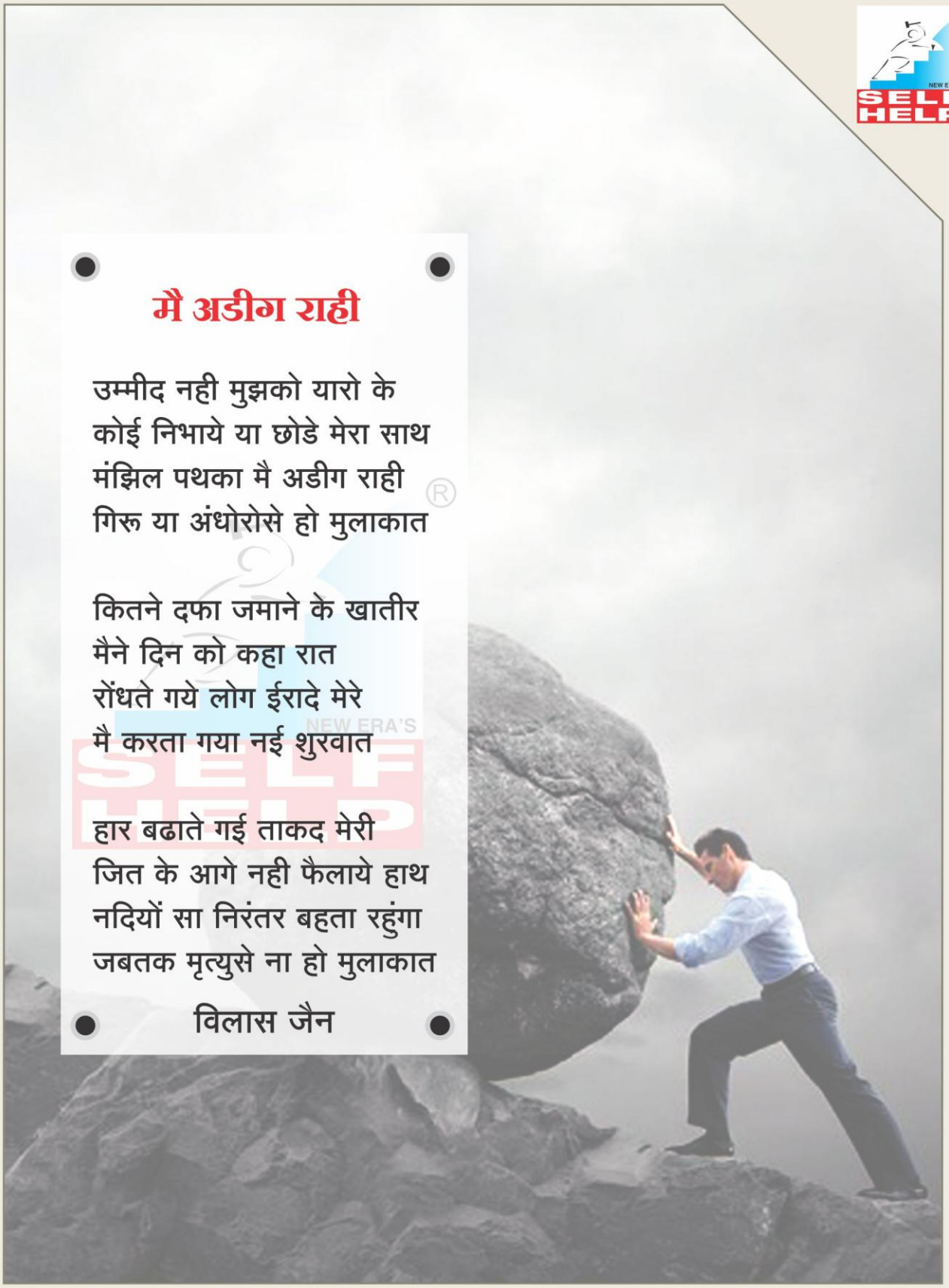

मै अडीग राही

उम्मीद नही मुझको यारो के
कोई निभाये या छोडे मेरा साथ
मंझिल पथका मै अडीग राही
गिरू या अंधोरोसे हो मुलाकात

कितने दफा जमाने के खातीर
मैने दिन को कहा रात
रोंधते गये लोग ईरादे मेरे
मै करता गया नई शुरवात

हार बढाते गई ताकद मेरी
जित के आगे नही फैलाये हाथ
नदियों सा निरंतर बहता रहुंगा
जबतक मृत्युसे ना हो मुलाकात

विलास जैन

जिवन मध्य

एक तरफ उभरती हस्तीयाँ
दुसरी तरफ विर्सजीत होती अस्तीयाँ
जीवन मध्य में मै खडा
मुझे खिचती दोनो तरफ ये कडीयाँ

जीना अभी मेरा भी बाकी है
समझे ना आने और जानेवाली पिढीयाँ
बची अब सिर्फ अपेक्षाये
अपेक्षापूर्ती का साधन मै बन गया

पहुँचना है जिंदगीके उस पार
बिच मझधार मै अकेला खिवैया
जिवन उर्जा कम हो रही
उम्मीदो के भार से लदी मेरी नैय्या

पार लगाना आसान गर
भावनाओंका इंधन तुमने भर दिया
अपनापन, कृतज्ञता और आदर
का पल पल इजहार तुमने किया

विलास जैन

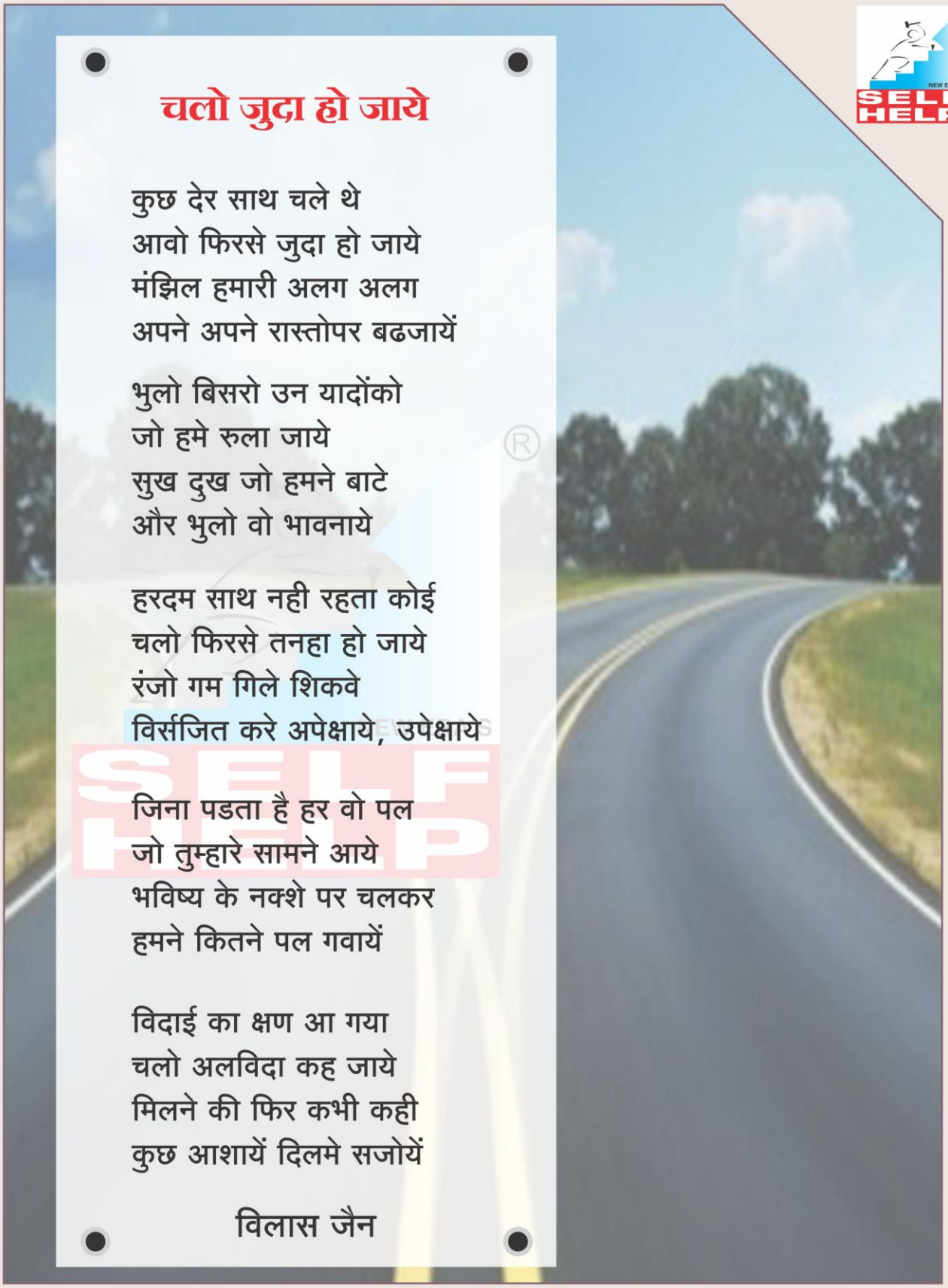

चलो जुदा हो जाये

कुछ देर साथ चले थे
आवो फिरसे जुदा हो जाये
मंझिल हमारी अलग अलग
अपने अपने रास्तोपर बढजायें

भुलो बिसरो उन यादोंको
जो हमे रुला जाये
सुख दुख जो हमने बाटे
और भुलो वो भावनाये

हरदम साथ नही रहता कोई
चलो फिरसे तनहा हो जाये
रंजो गम गिले शिकवे
विर्सजित करे अपेक्षाये, उपेक्षाये

जिना पडता है हर वो पल
जो तुम्हारे सामने आये
भविष्य के नक्शे पर चलकर
हमने कितने पल गवायें

विदाई का क्षण आ गया
चलो अलविदा कह जाये
मिलने की फिर कभी कही
कुछ आशायें दिलमे सजोयें

विलास जैन

एक साल चला गया

एक साल चला गया
क्या पाया, क्या खो गया
निरंतर भागते रहने से
मै जीवन जीना भूल गया... एक साल

पाने आया था आनंद मै
सिर्फ अहंकार मेरा बढ गया
मन को हल्का होना था
वो भारी होके रह गया... एक साल

'साधनोसे सुखके और' कि यात्रा मे
मै उलझताही चला गया
क्यो मिला मनुष्य जीवन मुझे
अब तक मैने क्या किया.... एक साल

दिल को बहलानेके लाख साधनोसे
अब दिल संभल नही रहा
एक अनजानी अनदेखी राह का
मै फिर से मुसाफिर हो गया... एक साल

योग, साधना, संगीत, सृष्टी
बस येही आनंद यहाँ दे पाया
वैसे तो हम कबके मर चुके
बस साँस रूकना बाकी रह गया... एक साल चला गया

विलास जैन

उड़ना है मुझे

जख्म अभी हरे
आसमान का फासला,
उड़नेको मै मजबुर
उड़ जा कहे घोसला।

छु लुगां मै आसमान
कर लिया है फैसला,
उँचे अरमानोंके सहारे
बढ़ गया है होसला।

जीऊंगा अब मै भरपूर
बन जाऊंगा विशाला,
बंदी घर नहीं लगेगी
अब ए प्यारी त्रिशला।

स्वाभिमान के इस यज्ञ में
जलकर बन जाऊंगा उजाला
अस्तीत्व के किरणोंको मेरे
रोक ना पाएगा 'बादल काला'।

विलास जैन

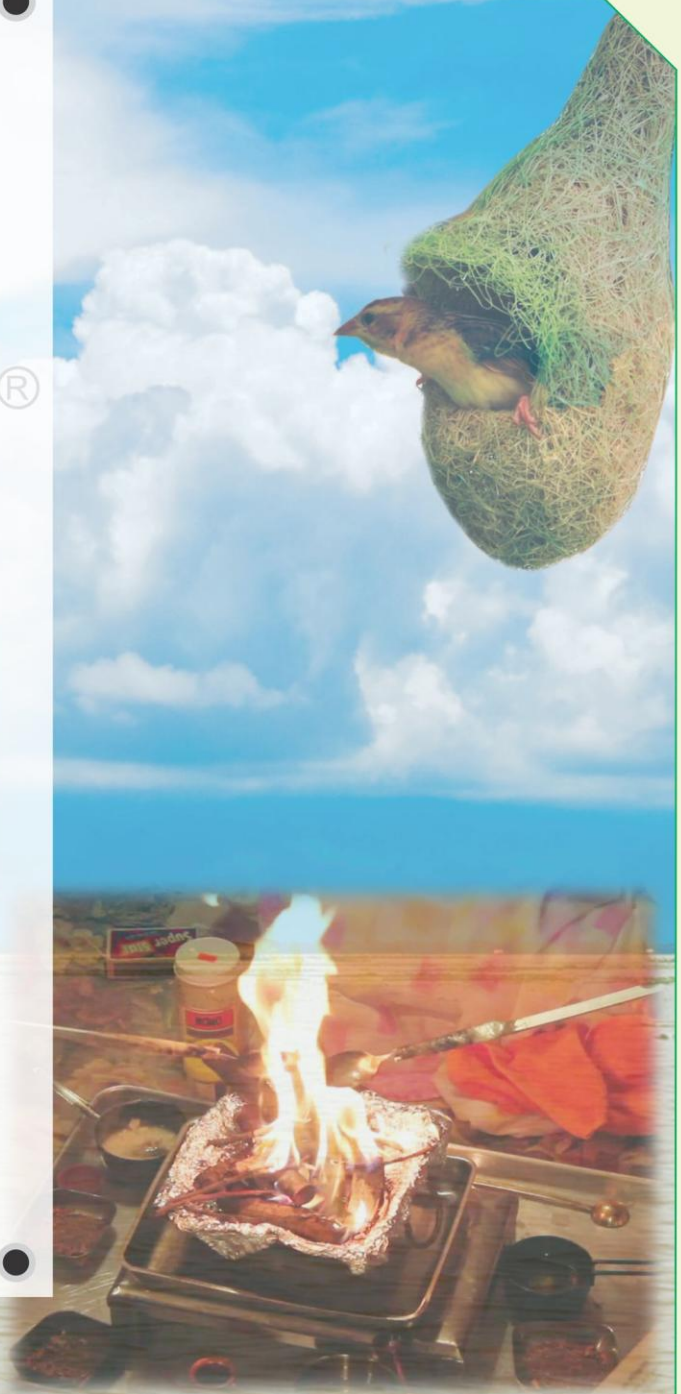

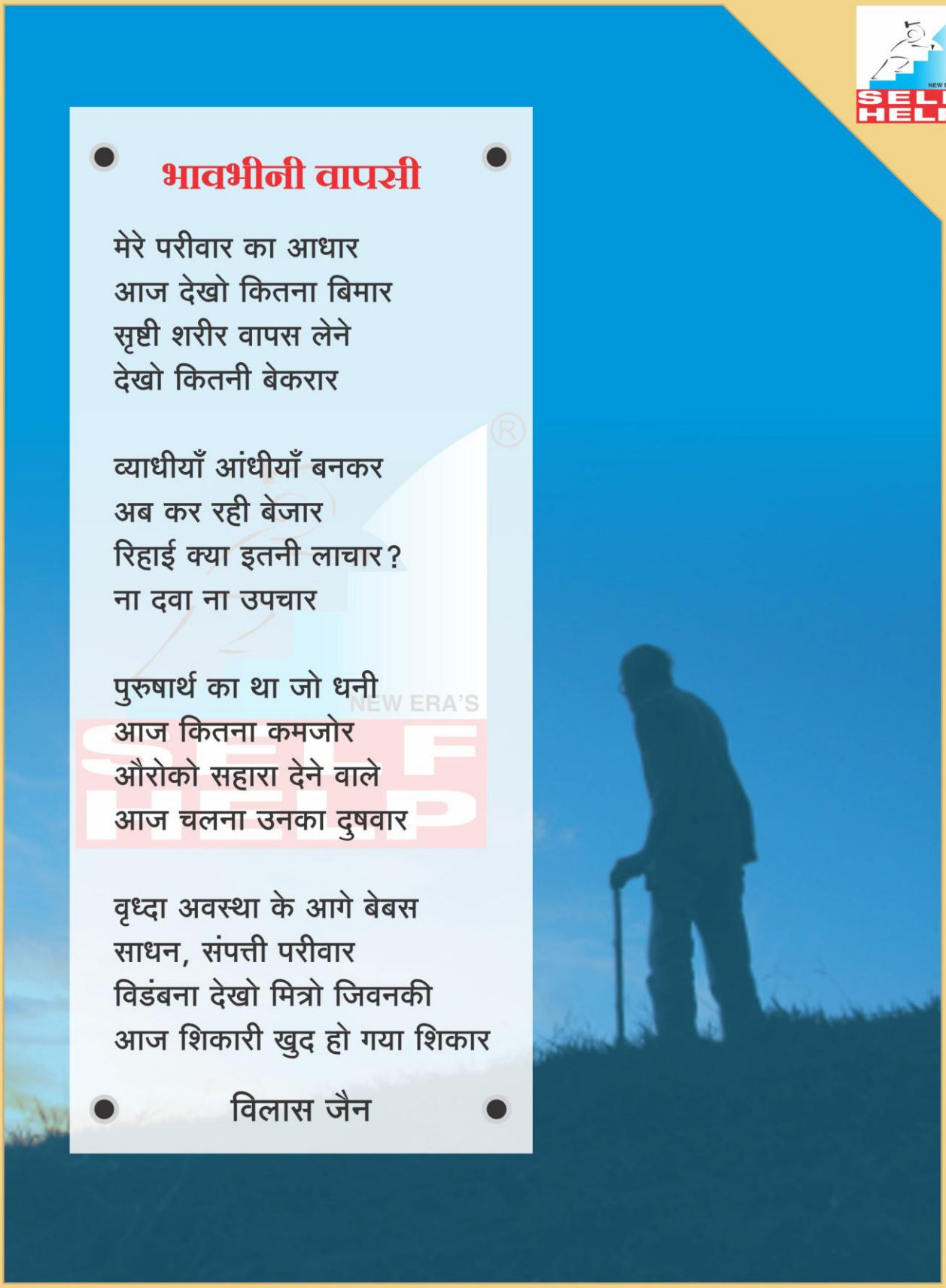

भावभीनी वापसी

मेरे परीवार का आधार
आज देखो कितना बिमार
सृष्टी शरीर वापस लेने
देखो कितनी बेकरार

व्याधीयाँ आंधीयाँ बनकर
अब कर रही बेजार
रिहाई क्या इतनी लाचार?
ना दवा ना उपचार

पुरुषार्थ का था जो धनी
आज कितना कमजोर
औरोको सहारा देने वाले
आज चलना उनका दुषवार

वृध्दा अवस्था के आगे बेबस
साधन, संपत्ती परीवार
विडंबना देखो मित्रो जिवनकी
आज शिकारी खुद हो गया शिकार

विलास जैन

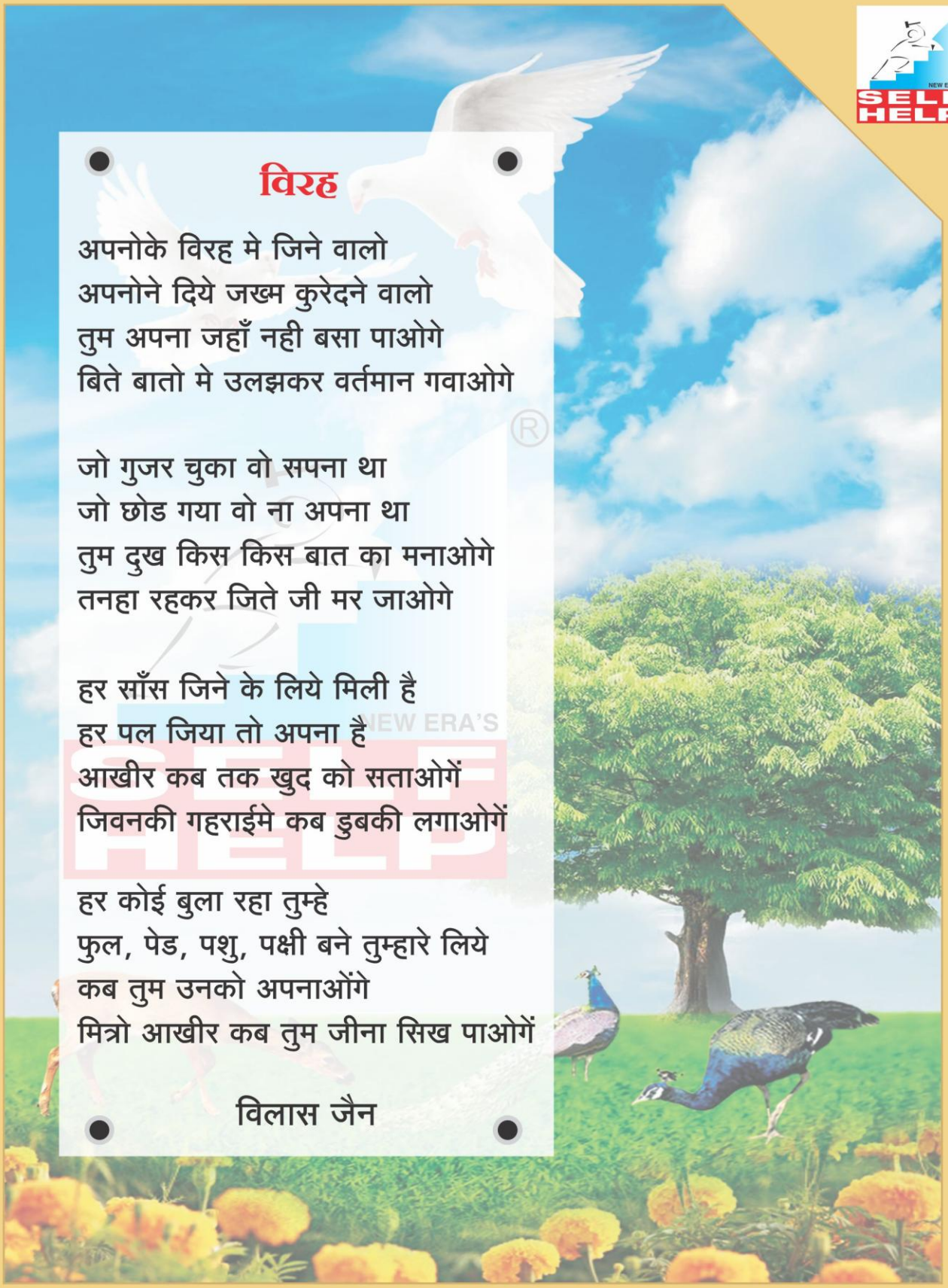

विरह

अपनोके विरह मे जिने वालो
अपनोने दिये जख्म कुरेदने वालो
तुम अपना जहाँ नही बसा पाओगे
बिते बातो मे उलझकर वर्तमान गवाओगे

जो गुजर चुका वो सपना था
जो छोड गया वो ना अपना था
तुम दुख किस किस बात का मनाओगे
तनहा रहकर जिते जी मर जाओगे

हर साँस जिने के लिये मिली है
हर पल जिया तो अपना है
आखीर कब तक खुद को सताओगें
जिवनकी गहराईमे कब डुबकी लगाओगें

हर कोई बुला रहा तुम्हे
फुल, पेड, पशु, पक्षी बने तुम्हारे लिये
कब तुम उनको अपनाओंगे
मित्रो आखीर कब तुम जीना सिख पाओगें

विलास जैन

कोई रास्ता नया

जिंदगी जब तु
ठुकराती है
तुझसे लढने की
ताकद बढ जाती है

जब तु छिनना
चाहती है सबकुछ
मुझे जिने की
वजह मिल जाती है

शौक से तुझे यहाँ
किसीने ना जीया
बचपन से बुढापेका समय
तेरे तिलीस्म मे खोया

पाने और खोने का नशा
तुने कुछ इस तरह चढाया
तु हरदम जीती
मै सबकुछ हार गया

सुनहरे पल के बदले यहाँ
कोई मिट्टी, कोई कागज
तो कोई आँसु थमा गया
निपटने तुझसे ये जिंदगी
खोजना होगा कोई रास्ता नया

विलास जैन

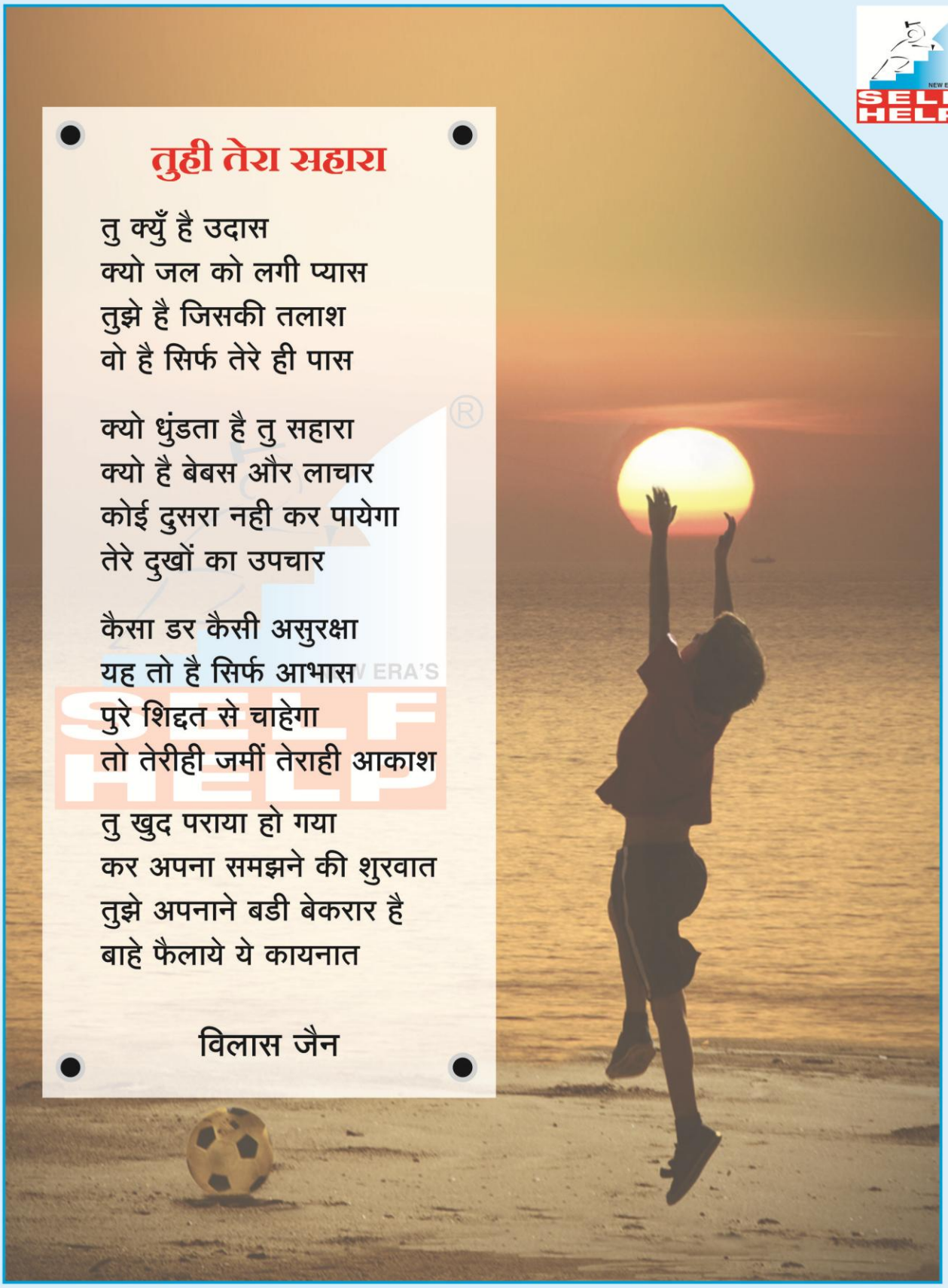

तुही तेरा सहारा

तु क्युँ है उदास
क्यो जल को लगी प्यास
तुझे है जिसकी तलाश
वो है सिर्फ तेरे ही पास

क्यो धुंडता है तु सहारा
क्यो है बेबस और लाचार
कोई दुसरा नही कर पायेगा
तेरे दुखों का उपचार

कैसा डर कैसी असुरक्षा
यह तो है सिर्फ आभास
पुरे शिद्दत से चाहेगा
तो तेरीही जमीं तेराही आकाश

तु खुद पराया हो गया
कर अपना समझने की शुरवात
तुझे अपनाने बडी बेकरार है
बाहे फैलाये ये कायनात

विलास जैन

नाराज हुँ मै

नाराज हुँ जमानेसे
फिर भी हँसता हुँ

गुनहगार नही हुँ
फिर भी इल्जाम सहता हुँ

कहना तो बहोत चाहता हुँ
पर खामोश रहता हुँ

समझता मै सबकुछ
पर अनजान बने रहता हुँ

गम मेरे भी बहोत है
पर औरोके उधार लेता हुँ

पराये है यहाँ सब
पर मै अपना मानता हुँ

तोडना नही आता मुझे
इसलीये बरदास्त करता हुँ

विलास जैन

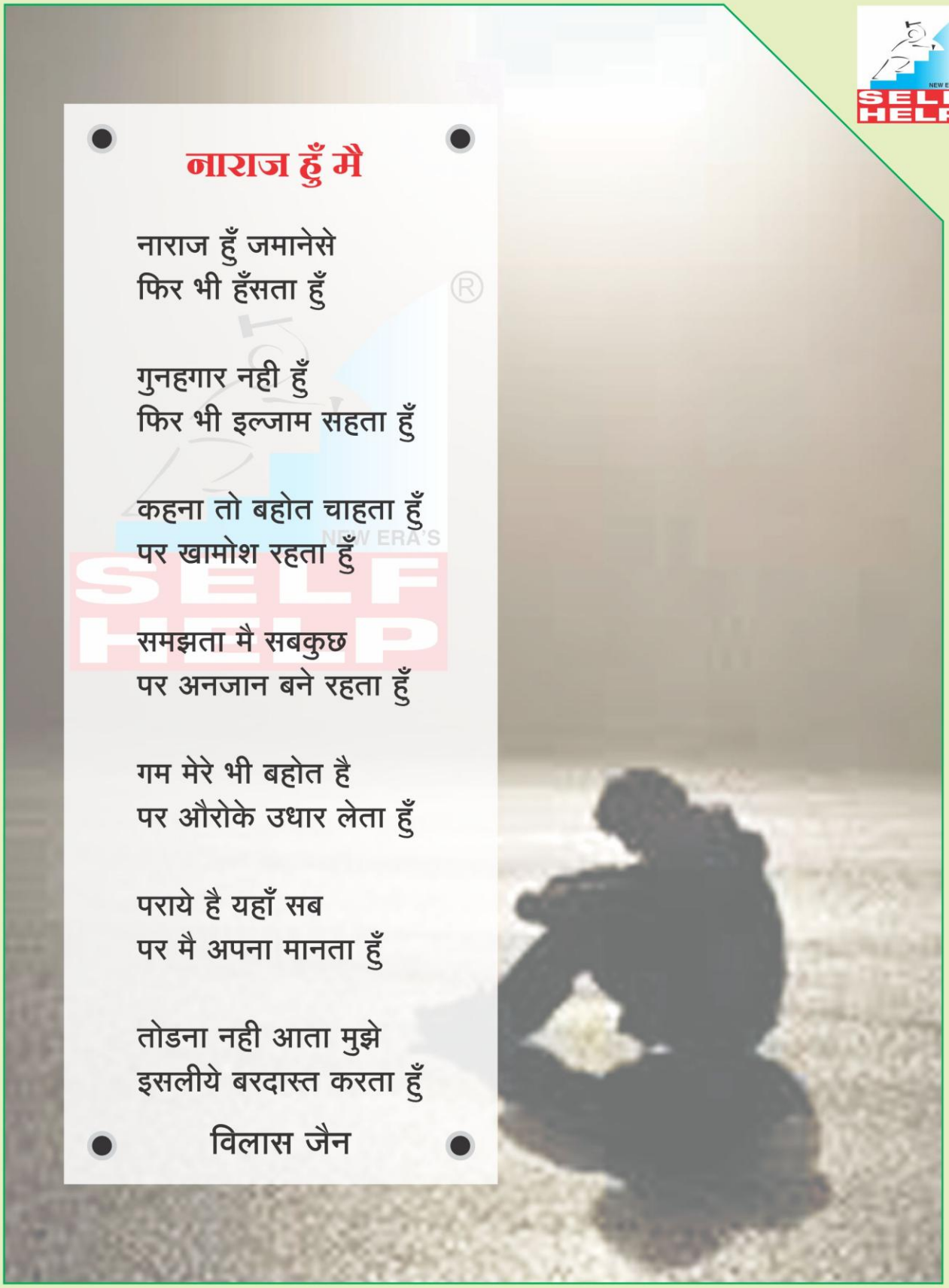

मै तेरा परीवार

अकेला समझकर लूटना
चाहा तुझे किसीने
मै लूट जाने को तैय्यार
हा मै हुँ तेरा परीवार...हा मै हुँ

तुझे सवाब बनाकर खुदाको
खुश करना चाहा किसीने
अब तु खुदा कि लाडली बनेगी
मै बनूगा तेरा मतदगार...हा मै हुँ

कमाई का साधन बनाना
चाहा तुझे किसीने
तेरे मुक्कदर कि मरम्मत करने
खुदा भि है तैय्यार...हा मै हुँ

अपनोने जिम्मेवारी समझकर
ठुकरा दिया तुझको
अब कईयोंकी जिम्मेदारी तु उठायेगी
ऐसे बनाऊंगा तुझे मदतगार..हा मै हुँ

जिदगींके सफर मे इन्सान
नही समझा तुझको किसीने
आ मै तुझे इन्सानियत कि
मिसाल बनाने तैय्यार...हा मै हुँ

विलास जैन

हमारे मराठी एवं हिंदी भाषी समाजोपयोगी साहित्य
हारे हुये व्यक्ती को प्रोत्साहीत करने प्रेरणात्मक
सुविचार, शेरो शायरी, दोहे

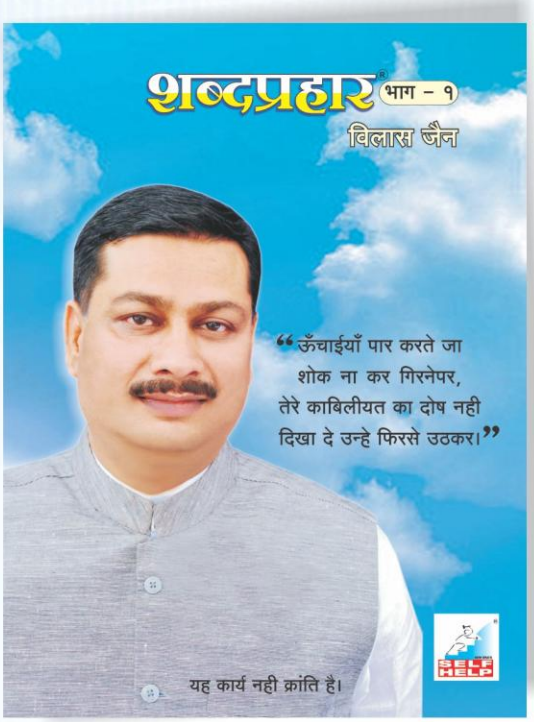

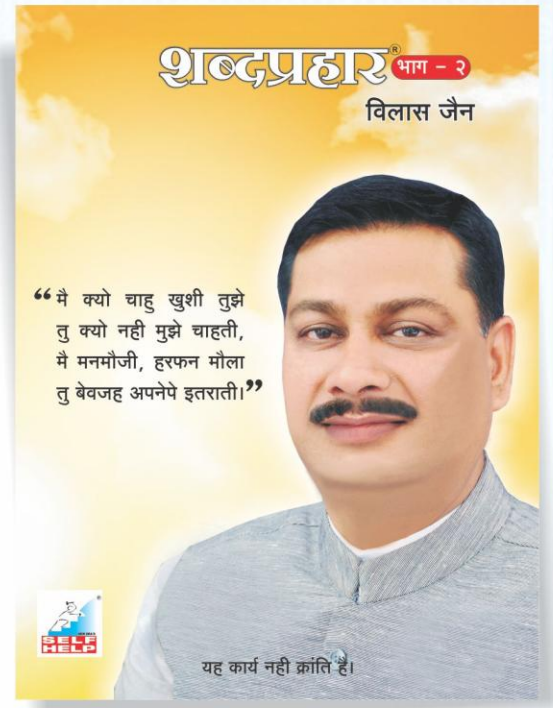

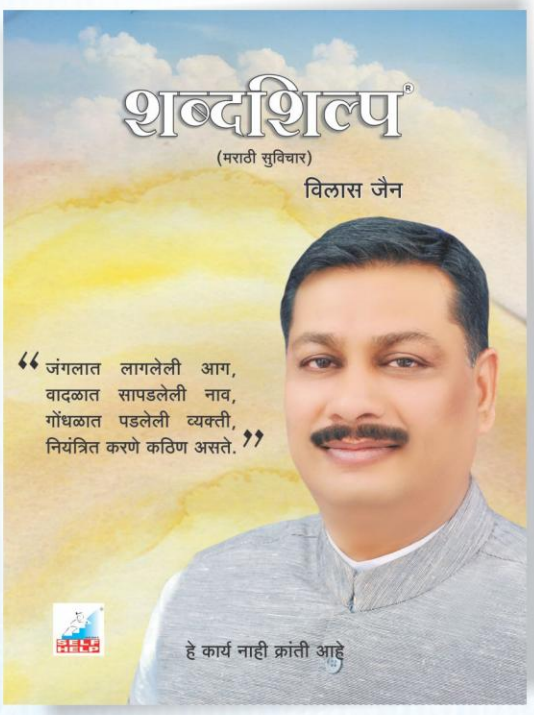

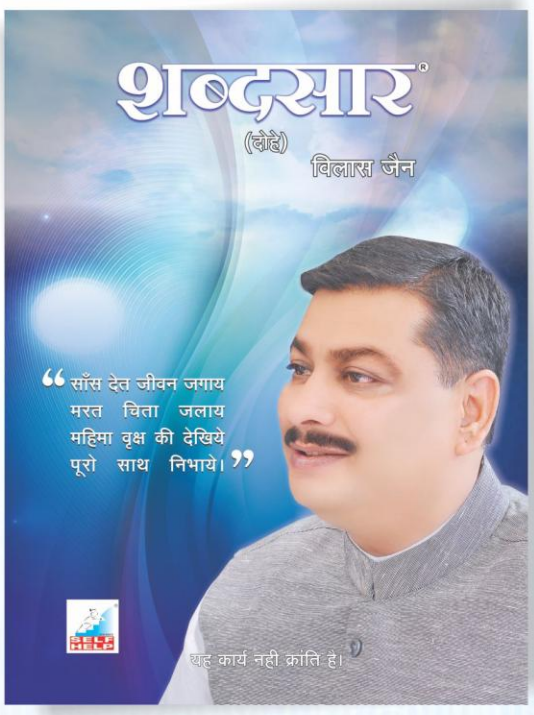

यह कार्य नही क्रांती है।

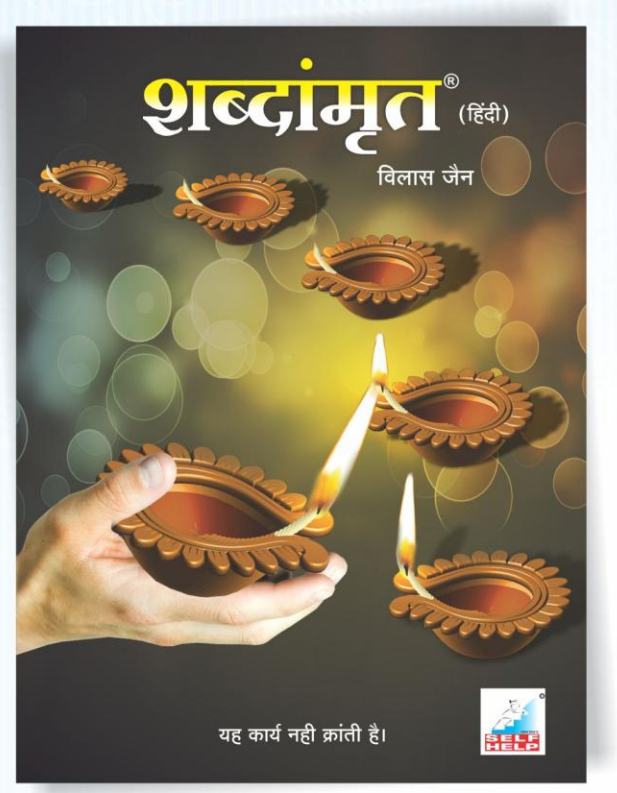

शब्दांमृत®
(हिंदी)
जीवन कि तरफ देखने का
नजरीयाँ देने वाली कविता संग्रह

शब्दांमृत®
(मराठी)
मराठी भाषी समाजपयोगी साहित्य
हारे हुये व्यक्ती को
प्रोत्साहीत करने के लिए
३९ कविताओं का संग्रह

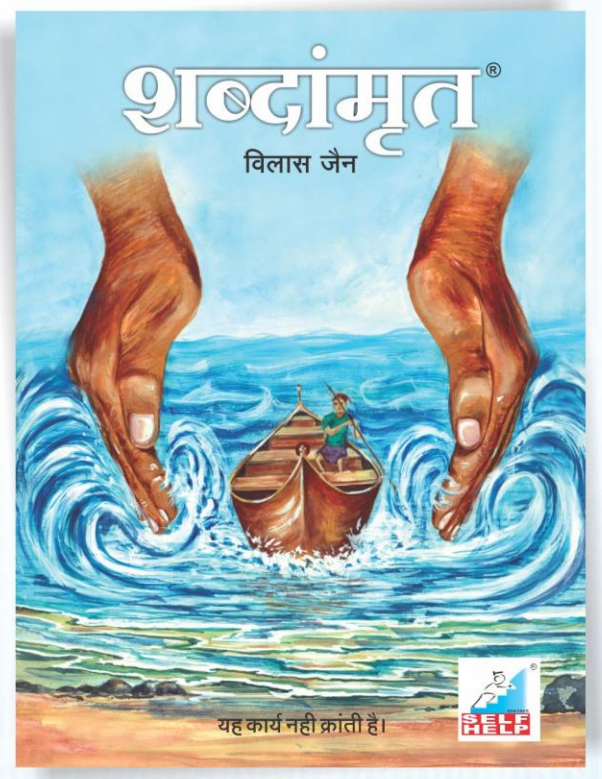

यह कार्य नही क्रांती है।

हमारे हिंदी भाषी समाजोपयोगी साहित्य बच्चोंके मनपर संस्कार ड़ालनेके लिए २५ कविताओं के संग्रह **नव निर्माण**® के चार भाग

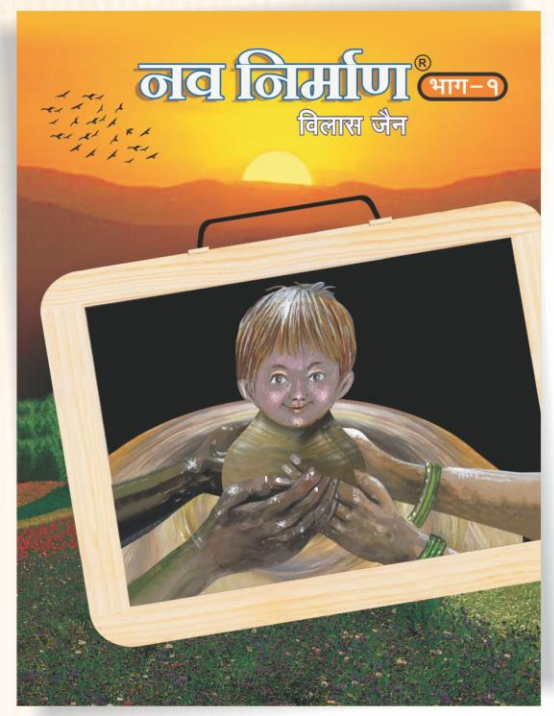

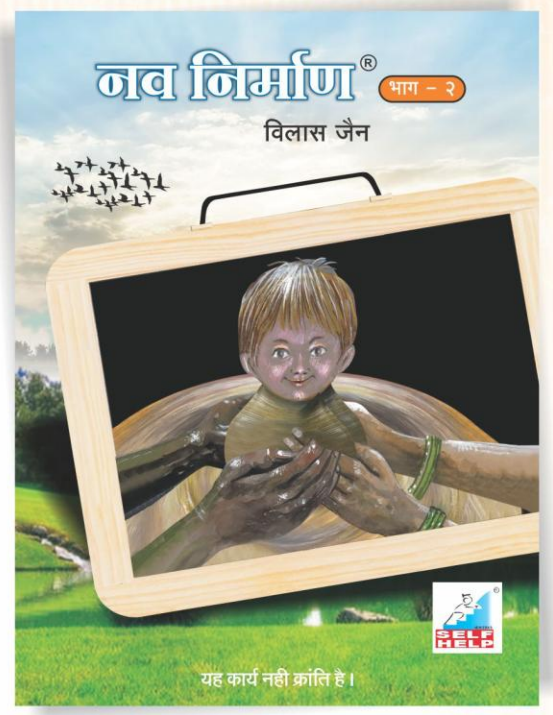

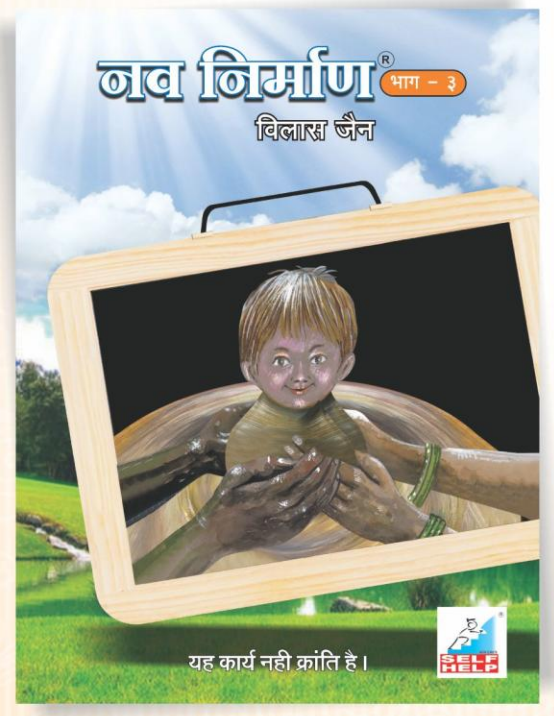

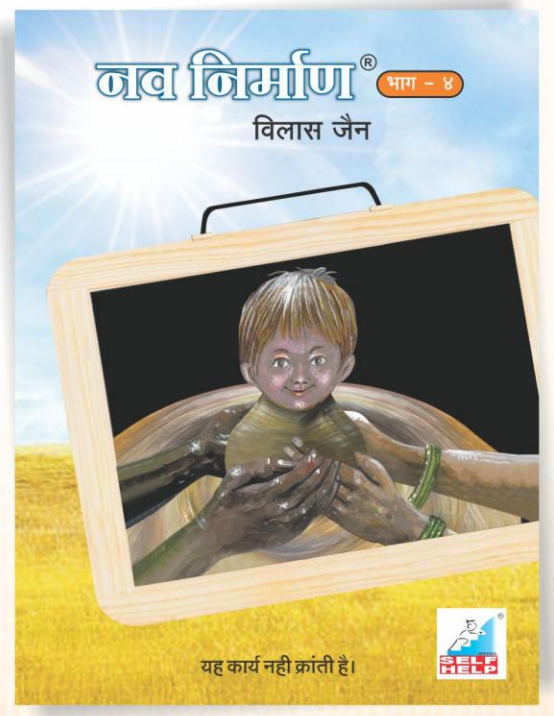

यह कार्य नही क्रांती है।

आभार

उन सब के प्रति
जो अच्छे है ।
अच्छा होने के लिये
सदैव तत्पर है ।
अच्छा हो इसलिये
प्रार्थना करते है ।
अच्छा करने के लिये
कड़ी मेहनत करते है ।
अच्छे व्यक्ति की
दिल से प्रशंसा करते है ।
और हरदम अच्छे के
पक्ष मे तन-मन-धन
देने को तैयार रहते है ।

धन्यवाद !

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

विशेष आभार :

मेरी धर्मपत्नी सौ. संगीता जैन, एम.ए.(इको.) इनके
जिन्होंने मेरे सभी हिंदी भाषिक किताबो का शुद्धलेखन किया।

यह कार्य नही क्रांती है।

मेरा परिचय

धुवाँ बन उड़ जाऊँगा
राख बन बिखर जाऊँगा,
कुछ देर दिलोमें रहकर तुम्हारे
मै इस जहाँसे गुजर जाऊँगा ।

विषमताओ को क्षमताओसे जीतनेका
राज मै लिख जाऊँगा,
जब जब आयेगा पतझड़
मै बहारोंकी याद दिलाऊँगा।

नश्वर काया पर क्या इतराऊँ
क्षण मे आँखो से ओझल हो जाऊँगा,
जो दिया है इस जहाँने
उसे सूत समेत लौटाऊँगा।

औकात, हिम्मत, ताकत, दौलत
ना कोई यहाँ अमर बनायेगा,
सदभावना, सदगुण, संवेदना, सर्मपण
बस इनसेही काम चलाऊँगा।

नही कोई पता और परिचय मेरा
बस एक अच्छा आदमी कहलाऊँगा,
जब भी आयेगा बुलावा उसका
गोदी मे उसके छुपके सो जाऊँगा।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांती है।

कीमत : १००/-